English

setuu अध्याय 12

0

Soul Himanshu

Like You and 20K others like this.

देवी गंगा का मानवलोक में अवतरण

वह हनुमान जी के आगमन का दूसरा दिन और चरण पूजा का पहला दिन था | पूजा के दो सत्र पूर्ण हो चुके थे | पहला सत्र बसंत नामक मातंग पुरुष के लिए था और दूसरा चरिता नामक मातंग महिला के लिए था | दुसरे सत्र की समाप्ति के पश्चात धनुष्क नामक एक मातंग को स्वयं इंद्र देव से कर्म और इच्छा का ज्ञान हुआ | चरण पूजा का तीसरा सत्र उसी धनुष्क के लिए था | जब सभी मातंग हनुमंडल में एकत्रित हो गए और हनुमान जी वहां प्रकट हो गए , तब धनुष्क ने इंद्र देव के साथ हुए घटनाक्रम के बारे में बताया | सभी उपस्थित जनों ने उसे ध्यानपूर्वक सुना और नियुक्त लिपिक ने उसे 'लोग बुक' में लिपिबद्ध किया |

यजमान धनुष्क की आत्मा को अर्पण योग्य करने के लिए हनुमान जी ने ज्ञान के शब्द कहे | वे बोले – "हे मातंगो , जैसा कि मैंने पहले बताया , राजा सागर भगवान् राम के पूर्वज थे | उनकी बड़ी पत्नी सुमति के भाग्य में लिखा था कि वह सदा निसंतान रहेगी | जब सुमति ने अपना दुःख ऋषि और्व को बताया तो ऋषि ने उसके भाग्य को बदलने की ठान ली | उन्हें पता था कि जीवन के लिए केवल दो चीजों की आवश्यकता होती है – (1) अस्तित्व का द्रव (2) काल के धागे |

[**हिंदी अनुवादक टीम की टिपण्णी** : हमने अंग्रेजी के 'स्पेस' शब्द का अनुवाद 'अस्तित्व का द्रव' किया है और 'एक्सिस्टेंस' शब्द का अनुवाद 'अस्तित्व' किया है | |]

उन्होंने अपने अस्तित्व-द्रव व काल के व्यापक ज्ञान का प्रयोग करके निष्कर्ष निकाला कि एक महिला 60000 बच्चों की माँ बन सकती है | उन्होंने एक बहुत बड़ा प्रयोग रचाया जिसके तहत राज्य की 60000 महिलाओं को आत्माहीन किया गया ताकि उनके गर्भ का प्रयोग करके 60000 नए जीवन शुरू किये जा सके |

"देवराज इंद्र इस प्रयोग से अत्यंत चिंतित थे | वे ऋषि और्व के सामने प्रकट हुए और बोले – "महर्षि और्व , मैं आपके ज्ञान का सम्मान करता हूँ और इस बात का कि आप अपने ज्ञान का प्रयोग मानवता के भले के लिए करते हैं | लेकिन आपका सुमति को बच्चे प्रदान करने का यह प्रयास जितनी समस्याओं को सुलझाता हैं उससे ज्यादा समस्यांए पैदा करने वाला है | अस्तित्व तथा काल के ज्ञान के आधार पर आप सुमति के 60000 बच्चों की देह का निर्माण तो कर लेंगे किन्तु उन देहो के लिए आत्माएं कहाँ से आएँगी? एक देह तो हड्डी मांस का सांस लेता हुआ एक ढांचा मात्र है | उसमे चेतना तो आत्मा से आती है | जैसा कि आप जानते हैं , सुमति की संतान के रूप में आना एक भी आत्मा के भाग्य में नहीं है | तो जो 60000 देह आप पैदा करने वाले हैं उनको कौन धारण करेगा ?"

"ऋषि और्व जानते थे कि देवराज इंद्र किस ओर संकेत कर रहे थे | उन्होंने उत्तर दिया – "हे देवराज, मैं जानता हूँ कि एक भी आत्मा के भाग्य में सुमति की संतान बनना नहीं है | इसलिए केवल शापित आत्माएं (सुर तथा असुर) ही उन देहो को धारण करेंगे | मेरा उद्धेश्य केवल मेरी शिष्य सुमति को संतान का सुख देना है | इस समय मैं और किसी चीज के बारे में विचार नहीं करना चाहता |"

"देवराज इंद्र तुरंत बोले – "महर्षि और्व, आप भली भाँती जानते हैं कि सुर देह में बंधकर रहना पसंद नहीं करते | वे स्वतंत्रता पसंद करते हैं | वे इस संसार के भिन्न सुख भोगने के लिए देह बदलते रहना पसंद करते हैं | इसलिए वे आपकी रची गई देहों का स्वामित्व ग्रहण नहीं करेंगे | वे किसी भी देह को कुछ समय के लिए धारण कर सकते हैं | वे किसी भी देह में पूरे जीवन नहीं रुकेंगे | केवल असुर आपकी रची गई देहो के स्वामी बनेंगे | 60000

असुर असुरलोक से मानवलोक में आयेंगे | (असुरलोक पृथ्वी की सतह से कुछ किलोमीटर ऊपर स्थित एक परत है |) वे मानवलोक को बड़ी तेजी से बर्बाद कर देंगे | इसलिए मेरी आपसे विनती है की आप अपने इस प्रयोग को बंद कर दें |"

"" हे इन्द्रदेव, यह मेरा अपने शिष्य को संतान का सुख देने का गंभीर प्रयास है | यह शुरू हो चूका है | इसे अब नहीं रोका जा सकता | हाँ, मैं ब्रह्मा जी से प्रार्थना करूँगा कि वे मुक्तिसागर में लहरे पैदा करके 60000 आत्माए निकाले जिन्हें विष्णु जी मेरी रची देहो को धारण करने भेज सके |" ऋषि और्व ने उत्तर दिया |

"देव इंद्र बोले – "महर्षि और्व , आप अच्छे से जानते हैं कि ऐसा नहीं होने वाला | इसका एक पहले से निर्धारित क्रम है कि कौन सी आत्मा कब नीचे आने वाली है | ब्रह्मा जी आपकी महत्वाकांक्षा को संतुष्ट करने के लिए उस क्रम का उल्लंघन नहीं करेंगे |"

"इंद्र के अलावा भी कई देवो तथा ऋषियों ने ऋषि और्व को मनाने की कोशिश की लेकिन सब बेकार गया | और्व अपने आपको इस प्रयोग के लिए वचनबद्ध कर चुके थे | अब उनके लिए इसको रोकना संभव नहीं था, चाहे कुछ भी हो जाए |

"अंततः देव इंद्र की बुरी शंकाएं उस समय सिद्ध हो गई जब ऋषि और्व द्वारा रची गई 60000 देहो को असुरों ने धारण कर लिया | राजा सागर और रानी सुमति के सभी 60000 पुत्र असुर थे | जैसे जैसे वे बड़े हुए, उन्होंने अपना बुरा चरित्र दिखाना शुरू कर दिया | जब तक वे व्यस्क अवस्था में पहुंचे, राज्य के सभी नागरिक उनके बुरे चरित्र से सताए जा चुके थे |

"अब ऋषि और्व को अपनी गलती का अहसास हुआ | उन्होंने इस बारे में ऋषि कपिल से मशवरा किया और देव इंद्र के साथ मिलकर उन 60000 असुरों से पीछा छुड़ाने की योजना बनाई | उस समय राजा सागर ने अश्वमेघ यज्ञ रच रखा था | इस यज्ञ में एक घोडा छोड़ा जाता है जो अपनी मर्जी से जहाँ चाहे वहां जाता है | जो उस घोड़े को अपनी जमीन से गुजरने देते हैं वे राजा का शासन स्वीकार करते हैं | जो घोड़े को बाँध लेते हैं वे राजा के शासन को चुनौती देते हैं |

"योजना के अनुसार राजा सागर का यज्ञ घोडा कपिल मुनि के आश्रम में पहुंचा | उसके पीछे पीछे जब राजा के 60000 पुत्र पहुंचे, उन्हें घोडा वहां सोया हुआ मिला; लेकिन वह बंधा हुआ नहीं था | उन्होंने घोड़े को जगाने का प्रयास किया लेकिन नहीं कर पाए | उन्होंने ध्यान मग्न ऋषि कपिल का रुख किया और अहंकार के स्वर में बोले – "हे भद्दे जंगली! तुमने अपने आश्रम में यह कैसा घास उगा रखा है कि हमारा घोडा इतनी गहरी नींद सो गया ? तुमने घोड़े को बाँधा नहीं है ; वह दर्शाता है कि तुम राजा के शासन को चुनौती नहीं देना चाहते हो | हमें इस घोड़े को जगाने का उपाय बताओ, अन्यथा मरने के लिए तैयार हो जाओ |"

"जब ऋषि कपिल ध्यान से नहीं उठे तो उन 60000 असुरों ने आश्रम को तहस नहस करना शुरू कर दिया | उन्होंने ऋषि की देह को अपने तीरों से असम्मानपूर्वक चुभाया |

"अंततः ऋषि कपिल ध्यान से उठे | वे बहुत शांत थे | उन्होंने आस पास देखा तो अपने आश्रम को तहस नहस हुआ पाया | तब भी वे शांत रहे और असुरों पर मुस्कुराये | फिर वे घोड़े के पास गए और उसका गंभीरता से निरिक्षण करके बोले – "हे मूर्खो! घोडा सो नहीं रहा है | इस घोड़े का अपहरण हो चूका है , वह भी पाताल में | इसकी केवल देह यहाँ है , इसकी आत्मा पाताल में जा चुकी है |"

"" पाताल के लोगों की हमारा यज्ञ घोडा अपहृत करने की हिम्मत कैसे हुई? उनकी हमारे शासन को चुनौती देने की हिम्मत कैसे हुई ? हम पाताल के लोगों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हैं |" 60000 असुरों का नेता चिल्लाया |

"" हाँ, हाँ, पाताल के विरूद्ध युद्ध!" बाकी असुर भी एक स्वर में चिल्लाये |

“ऋषि कपिल ने सलाह दी – “हे अज्ञानियों! राजा सागर का अश्वमेघ यज्ञ केवल मानवलोक के भूभाग के लिए है ! उनकी पाताल लोक पर शासन करने की कोई महत्वाकांक्षा नहीं है | इसलिए पाताल के विरुद्ध युद्ध घोषित करने से पहले अपने पिता से विचार विमर्श कर लो | मैं राजा सागर और पाताल वासियों के बीच मध्यस्थता करके घोडा वापिस ले आऊंगा |”

“असुर अहंकारवश बोले – “राजा सागर? हमें उस बूढ़े सठियाये हुए आदमी से सलाह करने की कोई आवश्यकता नहीं है | हम इस राज्य का भविष्य हैं | जो भी हमारे शासन को चुनौती देगा , हमें उसके विरुद्ध युद्ध करने का पूर्ण अधिकार है |”

“ऋषि कपिल ने विनम्रतापूर्वक पूछा – “हे अज्ञानियों! क्या तुम्हे पाताल का मार्ग भी मालुम है ? अगर तुम्हे युद्ध का रास्ता तक नहीं पता तो तुम क्या युद्ध जीतोगे?”

“” हे भद्दे जंगली! अगर तुम्हे अपनी जीवन रक्षा करनी है तो हमें पाताललोक भेजो|” असुर बोले |

“असुरों ने ऋषि कपिल को केवल उन्हें पाताल में भेजने के लिए बोला था; वे अपनी अज्ञानता तथा अहंकार के कारण उनसे उन्हें पाताल से वापिस लाने के लिए बोलना भूल गए | ऋषि ने उनके मस्तिष्कों को नियंत्रण में लिया और उन्हें एकतरफ़ा मार्ग से पाताल में भेज दिया | वे पाताल में जाकर वहां फंस गए | इस तरह ऋषि कपिल, और्व और देव इंद्र ने असुरों की अज्ञानता तथा अहंकार का फायदा उठाकर उन्हें पाताल में कैद कर दिया |

“अब ऋषि कपिल के आश्रम में 60000 आत्महीन देह थी | वे देह धड़क तो रही थी लेकिन उनकी (शापित) आत्माएं निकाली जा चुकी थी और पाताल लोक में कैद की जा चुकी थी | जब ऋषि और्व ऋषि कपिल के आश्रम में पहुंचे तो ऋषि कपिल बोले – “महर्षि, आपने इन देहो को रचा था इसलिए आपको ही यह नैतिक दिव्य अधिकार है कि आप इन्हें नष्ट करें | इससे पहले कि असुरलोक से ओर असुर आकर इन देहो में प्रवेश कर जाएँ, इन देहो को नष्ट कर दीजिये |”

“अब घोडा उठ चूका था क्योंकि ऋषि कपिल उसकी आत्मा को वापिस ले आये थे | उन्होंने घोड़े को आजाद कर दिया और अपने शिष्यों के साथ आश्रम से निकल गए | ऋषि और्व ने आश्रम को आग लगा दी और बाहर आ गए | कुछ ही मिनट में आग पूरे आश्रम में फ़ैल गई | आश्रम के खेतों में खड़ी गेंहूँ की खेती जलकर राख हो गई और उसके साथ साथ वे 60000 देहें भी |

“ऋषि और्व ने राजा सागर को उनके पुत्रों के बारे में सूचना दे दी | अगली सुबह पूरे राज्य को यह सुचना मिली – “राजा सागर के 60000 पुत्र ऋषि कपिल के क्रोध का शिकार बन गए | ऋषि कपिल ने उन्हें अपनी साधना शक्ति से जला दिया |” राज्य के सभी नागरिकों ने यह सूचना सुनकर राहत की सांस ली |

“बुराई संक्रामक होती है | उन 60000 असुरो की बुराई अब केवल उन तक सीमित नहीं रही थी | अब यह राज्य के अन्य लोगों में भी फ़ैल गई थी और एक महामारी का रूप ले रही थी | अतः समस्या पूर्णतः समाप्त नहीं हुई थी | अब चुनौती थी बुराई के संक्रमण को राज्य के हर नागरिक के दिल, दिमाग और कर्मों से बाहर निकाल फेंकने की |

“राज्य से बुराई को उखाड़ फेंकने के लिए राजा सागर ने कड़े कानून बनाये | छोटे छोटे अपराधों के लिए भी कठिन सजा निर्धारित की गई |

“एक दिन न्यायालय में लम्बी सुनवाई करने के पश्चात् राजा सागर कुछ विचलित से दिखाई दिए | मन की शांति हेतु वे अपने गुरु और्व से मिलने पहुंचे | अपने विचलित होने का कारण बताते हुए वे बोले – “गुरुदेव, आज एक बंदी मेरे न्यायालय में लाया गया | उस पर आरोप था कि उसने एक कुत्ते को

छड़ी से पीटकर यातना दी थी | मैंने उसे कठोर जीवनकैद की सजा सुना दी | मुझे लगता है कि उसे जरूरत से ज्यादा दंड मिला | मैं ऐसा अन्याय हर रोज कर रहा हूँ | मेरे मन की शांति खो गई है | मेरा मार्गदर्शन कीजिये |"

"ऋषि और्व ने उत्तर दिया – "हे राजन , आपके बनाए कानूनों के अनुसार हर अपराध की केवल एक सजा है – कैद | लेकिन त्रिदेव के नियमों के अनुसार हर अपराध की अलग सजा होती है | उदाहरण के तौर पर , जिस मनुष्य ने कुत्ते को सताया है उसकी सजा भुखमरी है | तुम्हारे कैदखानों में तो भोजन की कमी है नहीं, अतः इस जीवन में तो उसे भुखमरी की सजा मिलने वाली है नहीं | तो उसे यह सजा अगले जन्म में भोगनी होगी | उसे सजा देने के लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियां उसके लिए भुखमरी की परिस्थिति पैदा करेंगी, जहां भी वो अगला जन्म लेगा | शायद उसकी फसल जल जायेगी अथवा चोरी हो जायेगी | भुखमरी के चलते वह भी चोरी करने की कोशिश करेगा | भोजन प्राप्त करने के लिए शायद वह किसी का वध भी कर दे | इस तरह उसके द्वारा की गई बुराई आगे भी बहुत सी बुराइयों का कारण बनेगी | यह क्रम संसार के अंत तक चलता रहेगा | जब कोई बुरा कर्म किया जाता है , वह तब तक संसार में फैलता रहता है जब तक कि जिस आत्मा ने उसकी शुरुआत की थी वह मोक्ष प्राप्त करके इस संसार से चली नहीं जाती |"

"राजा सागर बोले – "गुरुदेव, मेरे राज्य में बुराई की शुरुआत असुरों ने की थी | वे ज्ञान प्राप्त कैसे कर सकते हैं? वे तो शापित आत्माएं हैं | उन्हें तो इस संसार में अंत तक रहना है |"

""तुम्हारे राज्य में ही नहीं , इस संसार में हर जगह बुराई की शुरुआत असुरों से ही होती है | बुराई का संक्रमण असुरों से ही अन्य आत्माओं में फैलता है | यह संसार क्रम कुछ इस तरह ही रचाया गया है | संसार का अंत होने पर भगवान् कल्कि इन असुरों को शापमुक्त करके मुक्तिसागर में भेज देंगे | तब बुराई का अंत होगा और सतयुग पुनः शुरू होगा | लेकिन फिर नई आत्माओं को भगवान् कल्कि का शाप मिलेगा और नए सुर तथा असुर बन जायेंगे | इस तरह यह काल क्रम चलता रहेगा | समस्या यह है कि मेरे 60000 बच्चों वाले प्रयोग के कारण यह कालक्रम बिगड़ गया है | ये 60000 असुर समय से पहले मानवलोक में उतर आये हैं | बुराई तेजी से बढ़ने लगी है | संसार अपने अंत की तरफ तेजी से बढ़ने लगा है |" ऋषि और्व ने बताया |

""तो इसका क्या उपाय है , गुरुदेव? क्या इन असुरों को पुनः असुरलोक में भेजना संभव है?"

""ऋषि कपिल और मैंने मिलकर उन असुरों को पाताललोक में कैद कर दिया है | यह असुरलोक में कैद करने जैसा ही है | समस्या यह है कि उनके द्वारा फैलाई गई बुराई अब भी यही हैं | सब कुछ पहले जैसा तभी होगा जब उनके द्वारा की गई बुराइयां भी धुल जायेंगी | हम इस बारे में कुछ समय से गहनता से विचार कर रहे हैं | हमारी एकमात्र आस शिवलोक यानी भगवान् शिव का संसार है | शिवलोक में हर चीज उदासीन हो जाती है – फिर वह चाहे अच्छाई हो अथवा बुराई | समुद्रमंथन के दौरान वे भगवान् शिव ही थे जिन्होंने जहर पीया था | वे सकारात्मक और नकारात्मक दोनों चीजों के प्रति उदासीन हैं | केवल वे ही इन असुरों को इनकी बुराई के साथ शिवलोक में धारण कर सकते हैं | सवाल यह है कि इन असुरों को इनकी बुराई सहित शिवलोक कैसे भेजा जाए |" ऋषि और्व बोले |

"राजा सागर बोले – "गुरुदेव, मैं अब बहुत बूढा हो गया हूँ | मैं अपना राज्य अपने पौत्र अंशुमन को सौपना चाहता हूँ | मैं उसको क्या निर्देश दूँ कि कम से कम वह तो अपने जीवन काल में इस बुराई को उखाड़ फेंके? मैं उसे उन 60000 असुरों के बारे में क्या बताऊं जो मेरे पुत्र थे?"

[सेतु टिपण्णी : अंशुमन असमंजस का पुत्र था और असमंजस राजा सागर का दूसरी रानी केशिनी से हुआ पुत्र था]

""उसे बताओ कि उसके 60000 पूर्वज जलाकर राख कर दिए गए थे | उसे कहो कि वह अपने पूर्वजों की उन अस्थियों (राख) की रक्षा करे क्योंकि वे अस्थियाँ शायद उनकी बुराई को उखाड़ फेंकने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं |" ऋषि और्व ने उत्तर दिया |

""मुझे समाधान मिल गया है |" ऋषि कपिल अपने चेहरे पर विजयी मुस्कान लिए वहां आये और बोले – "मुझे पता चला है कि एक अंत्यंत पवित्र आत्मा मरणलोकों में उतरने वाली है | हाँ, देवी गंगा मरणलोकों में उतरने वाली हैं | व्याहृति लोक (ऊपर वाला संसार) के राजा लोग उन्हें अपने संसार में

उतारने के लिए तपस्या कर रहे हैं | मानवलोक के राजाओं को भी तपस्या करकें उन्हें मानवलोक में उतारने का प्रयास करना चाहिए | मुझे विश्वास है कि पाताललोक के राजा लोग भी उन्हें अपने संसार में उतारने का प्रयास करेंगे जब उन्हें पता चलेगा |"

"राजा सागर ने पूछा – "क्या वे मानव देह धारण करने वाली हैं?"

"" नहीं!" ऋषि कपिल ने उत्तर दिया – "एक मानव देह इतनी पवित्र नहीं हो सकती कि वे उसे धारण कर सकें | वे संभवतः जल देह , और वह भी बहते हुए जल की देह यानी नदी देह धारण करेंगी | जल हमारे संसार का सबसे पवित्र पदार्थ है और बहता हुआ जल सबसे पवित्र होता है | इसलिए मुझे लगता है वे नदी देह ही धारण करेंगी |"

"ऋषि और्व को अब ऋषि कपिल का विचार समझ आ गया था | वे राजा को बोले – "हे राजन , अपने पौत्र को अपने राज्य की बागडोर थमा दो और उसे बोलो कि वह 'अपेक्षा तप' शुरू करे | जब एक औरत गर्भवती होती है , वह 9 महीने तक 'अपेक्षा तप' करती है | तभी एक आत्मा उसके द्वारा गर्भ में धारण की गई देह में प्रवेश करती है | उसी तरह , देवी गंगा की आत्मा को उतारने के लिए राजा को 'अपेक्षा तप' करना पड़ेगा | राजा को बोलो कि वह एक गर्भवती स्त्री की तरह धैर्य धारण करे और देवी गंगा की अपेक्षा में जीवन व्यतीत करे | देवी गंगा की पवित्र आत्मा को मानवलोक में उतारने में कई दशक लग सकते हैं | जब अंशुमन राज्य त्याग दे तब उसकी संतानों को यह तप चालु रखना होगा | जब देवी गंगा मानवलोक में उतरेंगी , तब वे शिवलोक का द्वार बन जायेंगी | तब वे 60000 असुर अपनी बुराइयों सहित शिवलोक में प्रवेश कर पायेंगे | जब ऐसा होगा तुम्हारा राज्य बुराई से मुक्त हो जाएगा |"

"हे मातंगों , यह जानने के लिए कि देवी गंगा शिवलोक का द्वार कैसे बनी , तुम्हे यह जानना होगा कि यह विश्व क्या है और तुम कौन हो |" हनुमान जी बोले – "तीन परम शक्तियां हैं – भगवन ब्रह्मा, विष्णु और शिव | इन तीनों की एक एक सम्पति है | ब्रह्मा जी की सम्पति हैं आत्माएं , विष्णु जी की सम्पति है अस्तित्व का द्रव और शिव की सम्पति है काल के धागे | अतः यह विश्व तीन चीजों से है – आत्माएं , अस्तित्व का द्रव और काल | भगवान् विष्णु ने अपनी सम्पति अर्थात अस्तित्व के द्रव के प्रबंधन के लिए एक प्रबंधक नियुक्त कर रखा है , उनका नाम है इंद्रदेव | उसी तरह भगवान् शिव ने काल के धागों के लिए कालदेव नामक प्रबंधक रखा हुआ है | ब्रह्मा जी ने आत्माओं के प्रबंधन के लिए कोई प्रबंधक नहीं रखा है और रखने की जरूरत भी नहीं है क्योंकि आत्मा में पहली इच्छा जगाने के बाद वह कर्म-इच्छा के नियमों के अनुसार विचरण अपने आप करती है |

"जैसा कि मैंने पहले बताया, एक जीवन तब शुरू होता है जब कोई आत्मा काल के धागों पर बैठती है और धागों पर अस्तित्व का द्रव गिरता है | एक जीवन को शुरू करने के लिए 7 काल धागों की आवश्यकता होती है |

"जब देवी गंगा को पता चला कि व्याहृति लोक (उपरी संसार) , मानव लोक (हमारा संसार) तथा पाताल लोक (नीचला संसार) के राजा उन्हें अपने अपने लोक में उतारने के लिए तपस्या कर रहे हैं तो उन्होंने इच्छा जताई कि वे तीनों लोक में एक साथ अवतरित होंगी | लेकिन तीनो लोको के समय अलग अलग हैं | अतः उनके लिए तीनों लोकों में एक साथ अवतरित होना असंभव था | विष्णु जी ने उन्हें बताया – "देवी , मृत लोकों में जीवन के लिए काल के 7 धागों पर बैठना आवश्यक है | लेकिन इन तीनो लोकों के अलग अलग काल पट्टे हैं | आप एक लोक में केवल एक समय रह सकती हैं |"

"देवी गंगा बोली – "प्रभु, मेरी अपनी कोई इच्छा नहीं है किन्तु इन तीनों लोको के लोगो की इच्छा है कि मैं उनके लोक में अवतरित हों जाऊं | इन तीनो लोको के लोगों की इच्छाएं पूर्ण करने का कोई तो उपाय होगा!"

"विष्णु जी बोले – "जैसा कि आप जानते हैं भगवान् शिव जी मरण लोकों में अस्तित्व का आधार प्रदान करते हैं | साधारणतः अस्तित्व का आधार काल के 7 धागे होते हैं किन्तु आपके लिए शिव अपवाद कर सकते हैं और आपको अस्तित्व के आधार के रूप में स्वयं अपने बाल प्रदान कर सकते हैं | तब आप तीनों लोकों में एक साथ अस्तित्व में आ सकती हैं |"

“हे मातंगो, राजा सागर के पौत्र अंशुमन और फिर अंशुमन के पुत्र दीलिप ने ‘अपेक्षा तप’ में अपना जीवन खपा दिया किन्तु देवी गंगा अवतरित नहीं हुई | उसके बाद दिलीप के पुत्र भागीरथ ने राज्य संभाला और इस तप को सबसे कठोर रूप में करना शुरू किया | जब एक गर्भवती महिला बच्चे की अपेक्षा कर रही होती है तब वह हर पल बच्चे के बारे में सोचती है | सोने के बाद सपने में भी वह बच्चे के बारे में ही सपने लेती है | भागीरथ ने एक गर्भवती औरत से भी अधिक कठिन अपेक्षा तप किया | अंततः देवी गंगा अवतरित हुई |

“मरण लोक के अन्य जीवो के विपरीत देवी गंगा की आत्मा स्वयं शिव के बालों पर विराजमान है | जिससे कि वे व्याहृति , मानव तथा पाताल लोक में एक साथ अस्तित्व में हैं | कोई भी आत्मा देवी गंगा की प्रार्थना करके उनके करीब आ सकती है | उनके करीब आने का अर्थ है भगवान् शिव के बालों के करीब आना | उसके बाद देवी गंगा उस आत्मा को शिव लोक में शिव केशो के जरिये प्रवेश का मार्ग दे सकती हैं | इसलिए देवी गंगा शिव लोक का एक द्वार हैं |

“हे धनुष्क! तुम चरण पूजा के इस सत्र के यजमान हो | मैं तुम्हे देवी गंगा से अभी प्रार्थना करने की सलाह देता हूँ | तुमने अभी अभी गंगा अवतरण की कहानी मुझसे सुनी | इसलिए तुम्हारी आत्मा अब देवी गंगा के समीप हो गई है | मेरे बोले गए शब्दों का ध्यान करो |” हनुमान जी बोले |

“धनुष्क ने अपनी आँखें बंद की और गंगा अवतरण की कहानी का ध्यान करने लगा | शीघ्र ही वह अपनी देह से बाहर निकल गया और देवी गंगा के समीप पहुंचा | उन्होंने उससे प्रश्न किया – “तुम कौन हो?”

“मैं एक आत्मा हूँ , देवी !” धनुष्क ने उत्तर दिया |

“केवल एक आत्मा? तो तो तुम्हे मुक्तिसागर में होना चाहिए | तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम मरण लोक में हो | इसका अर्थ है कि तुम केवल एक आत्मा नहीं हो , तुम्हारे कुछ कर्म और इच्छाएं हैं | अपना परिचय दो |” देवी गंगा बोली |

धनुष्क ने अपने अच्छे कर्मों और इच्छाओं का ध्यान शुरू कर दिया | कुछ समय बाद वह बोला – “देवी , मैंने अभी अभी अपने कर्म तथा इच्छाओं का पुनःस्मरण किया | क्या आपको मेरा परिचय मिला?”

“नहीं|” देवी गंगा ने उत्तर दिया – “ऐसा लग रहा है कि तुम अपने अच्छे कर्म तथा इच्छाओं से अपना परिचय कराने का प्रयास कर रहे हो | ये काम नहीं करेगा | मैं एक श्वेत पत्थर की भांति पवित्र हूँ | अगर श्वेत पत्थर पर तुम श्वेत स्याही से कुछ लिखना चाहो तो बात नहीं बनेगी | तुम्हे श्वेत पत्थर पर काली स्याही का प्रयोग करना होगा | इसलिए अपने बुरे कर्म तथा इच्छाओं से अपना परिचय कराओ |”

धनुष्क ने अपने जाने अनजाने बुरे कर्मों तथा इच्छाओं का ध्यान किया | देवी गंगा बोली – “हे आत्मा, मैं अब तुम्हारी पहचान अच्छे से देख सकती हूँ | अगर इच्छा हो तो तुम अब शिवलोक में प्रवेश कर सकते हो |”

अब धनुष्क की आत्मा शिवलोक में प्रवेश कर गई | दूसरी ओर हनुमंडल में वहां मातंग उसकी देह को जिज्ञासापूर्वक देख रहे थे | उसकी देह किसी ध्यानमग्न ऋषि की देह जैसी लग रही थी | उस सत्र की पूजा का होतर उर्वा था | उसने हनुमान जी से पूछा – “प्रभु , क्या आपको पूर्ण विश्वास है कि इसकी आत्मा वापिस आएगी? अगर उसकी आत्मा शिवलोक में ही रह गई तो क्या होगा?”

हनुमान जी ने उत्तर दिया – “हे होतर , इसकी आत्मा शिव लोक में केवल बुरे कर्म और इच्छाएं लेकर गई है | उसके अच्छे कर्म व इच्छाएं अब भी यही हैं | वे उसको अपने आप यहाँ खींच लायेंगे |”

कुछ समय पश्चात् धनुष्क की आत्मा उसकी देह में लौट आई | हनुमान जी बोले – "हे धनुष्क , तुमने अपने कुछ बुरे कर्म और इच्छाओं को अभी अभी शिवलोक में भेज दिया , मात्र देवी गंगा की प्रार्थना और ध्यान करके | तुमने अपने आपको पवित्र कर लिया | हे मातंगो . क्या तुम्हे अब समझ आया कि कैसे देवी गंगा कर्मों को पवित्र करती हैं |"

धनुष्क ने उत्तर दिया – "हे प्रभु , मैं अभी अभी शिवलोक में गया | यह सचमुच एक पवित्रकारी अनुभव था | कृपा हमें यह बताएं कि गंगा जी ने कैसे उन 60000 असुरों को उनके बुरे कर्मों सहित शिवलोक में भेजा?"

"हे धनुष्क , अगर तुम्हारी देह को राख कर दिया जाए तो क्या राख से पुनः देह जीवित करने की कोई सम्भावना है?" हनुमान जी ने पूछा |

"अगर देवगण चाहे तो कुछ भी असंभव नहीं है प्रभु |" धनुष्क ने उत्तर दिया |

हनुमान जी बोले – "जब एक देह मृत होती है तो उसको जीवित करने की काफी संभावना रहती है | देवगण ही नहीं , ज्ञानी ऋषि भी उसे जीवित कर सकते हैं | लेकिन जब देह को राख कर दिया जाता है तो उसमे से देह को जीवित करने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है | देवगणों के पहलु से हम कह सकते हैं कि देह को राख से भी जीवित किया जा सकता है | आत्मा राख के साथ इस आशा में जुडी रहती है कि उसमे से देह पुनर्जीवित की जा सकती है | लेकिन जब राख को पानी के बहाव में तीतर बीतर कर दिया जाता है , राख का एक एक कण अलग हो जाता है , उस अवस्था में देह को पुनर्जीवित करने की संभावना लगभग शून्य हो जाती है | तब आत्मा राख से अपना लगाव तोड़ देती है |

"राजा सागर के उन 60000 संतानों का भी वही हुआ | उनकी आत्मा अर्थात असुर पाताल में कैद किये जा चुके थे ; लेकिन उनकी अस्थियाँ ऋषि कपिल के आश्रम ने सुरक्षित कर रखी थी | इसलिए वे असुर उस राख से इस आशा में जुड़े हुए थे कि उनकी देहे उसमे से पुनर्जीवित की जा सकती हैं |

"जब देवी गंगा मानवलोक में आई, तो भागीरथ ने सबसे पहला काम किया अपने 60000 पूर्वजों की राख को नदी में प्रवाहित करने का | गंगा जी मानवलोक में भी थी और पाताललोक में भी | जब राख प्रवाहित की गई, पाताल में कैद असुर गंगा जी की आत्मा के समीप आ गए और बोले – "हे जलदेहधारिणी, वह राख हमारी देहों की है | उसे तीतर बीतर मत करों | हम अपनी देहों के पुनर्जीवित होने का इन्तजार कर रहे हैं |

देवी गंगा ने उनसे पुछा – "तुम कौन हो, अपना परिचय दो?"

"अपने परिचय में देने हेतु उन 60000 असुरों के पास केवल बुरे कर्म थे | जैसे ही उन्होंने ऐसा किया, देवी गंगा ने शिव लोक में उनका प्रवेश करवा दिया | वे अपनी उस सारी बुराई के साथ शिवलोक में प्रवेश कर गए जो उन्होंने अपनी उन 60000 देहो के द्वारा की थी | इस तरह राजा भागीरथ ने अपने राज्य को उस बुराई से छुटकारा पा लिया जो महामारी का रूप ले चुकी थी | इस तरह ऋषि और्व द्वारा की गई गलती की भी भरपाई हो गई |

"हे मातंगों, मैंने तुम्हे देवी गंगा के अवतरण की कहानी बताई है | जो भी इसे सुनता है वह देवी गंगा के समीप आ जाता है और उसके कर्मों का शुद्धिकरण हो जाता है |"

जब हनुमान जी ने ब्रह्मज्ञान का अपना प्रवचन पूर्ण कर दिया , बाबा मातंग ने यजमान धनुष्क का अर्पण करने की प्रक्रिया शुरू कर दी |

[सेतु नोट: यहाँ पर यह पुनः स्पष्ट करना आवश्यक है कि हमारे ऊपर अनगिनत संख्या में संसार हैं जिन्हें एक साथ 'व्याहृति लोक' कहा जाता है, और हमारे नीचे भी अनगिनत संख्या में संसार हैं जिन्हें पाताल कहा जाता है | किन्तु हमारे ऊपर के केवल 7 और नीचे के भी केवल 7 लोक ही हमें प्रभावित कर सकते हैं | इसलिए हमारे लिए असल में केवल 7 व्याहृति और 7 पाताल हैं | इस अध्याय में व्याहृति शब्द का प्रयोग हमारे बिलकुल ऊपर जो लोक है उसके लिए और पाताल शब्द का प्रयोग हमारे बिलकुल नीचे जो लोक है, उसके लिए किया गया है |]

हनुमान जी की लीलाओं का यह अध्याय यही समाप्त होता है |

Like You and 20K others like this.

--- सीधे अर्पण पर जाएँ ---

आत्मा पर भ्रम की परतें

Himanshu, अध्याय पढने के बाद यह पर्यवेक्षण करना आवश्यक है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं | अगर आप कुछ ऐसा महसूस कर रहे हैं - "वाह! मैंने कुछ नया पाया |" अथवा "वाह, मैंने कुछ नया सीखा |" अथवा "मेरी अपने प्रभु ले प्रति भक्ति ओर भी बढ़ गई|" इत्यादि तो आप अपने प्रभु की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ें हैं | आप उतनी ही दूरी पर अटके हुए हैं |

अगर अध्याय पढने के बाद आप कुछ ऐसे महसूस कर रहे हैं जैसे आपके अन्दर से कुछ बाहर निकलकर गिर पड़ा हो और आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हों तो आप अपने प्रभु की तरफ कम से कम एक कदम बढ़ चुके हैं |"

आपकी आत्मा एक आईने की तरह है जिसके ऊपर इस बाहरी संसार के कारण धुल चढ़ गई है | अगर अध्याय पढने के बाद आप ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपने कुछ नया पा लिया है तो उसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा पर एक और परत चढ़ा ली है | आप प्रभु के साक्षात् दर्शन तभी कर सकते हैं जब आप ये परतें हटायें | अतः अगर आप इस समय आत्मा से हल्का महसूस नहीं कर रहे हैं तो आप कुछ समय बाद फिर आकर यह अध्याय पढ़िए |

अगर आप आत्मा से हल्का महसूस कर रहे हैं तो इसका अर्थ है कि आपने अपनी आत्मा के आईने से कम से कम एक धुल की परत साफ़ कर ली है | अब आपका अगला कदम होना चाहिए कि यह धुल की परत वहां पुनः न बैठे | (जब आप अपने घर में कोई आइना कपडे से साफ़ करते हैं तो आप उस कपडे को अन्दर यूँ ही नहीं रख देते , आप उसे बाहर झड़काकर आते हैं)

धुल की परत फिर से आत्मा पर न बैठे, इसके लिए प्रभु को अर्पण किया जाता है | अर्पण फूलो , फलो या किसी भी ऐसी वस्तु का हो सकता है जो आपसे जुडी हुई हो | मातंग संस्कृति में आत्मा से हल्का महसूस करने के 108 घंटे के अन्दर अन्दर अर्पण करने का विधान है | आप बाजार से भी फल का अर्पण खरीद सकते हैं क्योंकि आपका पैसा भी आपसे जुडा हुआ है |

भगवान् विष्णु का अंतिम अवतार

जब भगवान् राम ने अपनी सांसारिक लीलाएं पूरी की और विष्णु लोक में चले गए तब हनुमान जी भी अयोध्या से वापिस आ गए और जंगलों में रहने लगे | वे अपने अदृश्य रूप में भक्तों की सहायता करते रहे | लेकिन जब महाभारत काल में भगवान् विष्णु कृष्ण के रूप में धरती पर आये तब हनुमान जी भी जंगलों से बाहर आये और पांड्वो की सहायता की (उन्होंने पूरे युद्ध में अर्जुन के रथ की रक्षा की)

महाभारत युद्ध के पश्चात् हनुमान जी फिर जंगल में चले गए | उन्होंने अदृश्य रूप में भक्तों की रक्षा करना जारी रखा | लेकिन दृश्य रूप में केवल ऋषि मुनि ही उन्हें देख सकते थे वो भी जंगलों में | उदाहरण के तौर पर , मातांगो को जंगल में हर 41 साल बाद उनके आतिथ्य का सुख प्राप्त होता था |

अब हनुमान जी ने अपनी लीलाए करके एक बार फिर से पूरे संसार के सामने अपने दृश्य स्वरुप का दर्शन कराया है | लेकिन वे ऐसा तभी करते हैं जब भगवान् विष्णु किसी अवतार में धरती पर मौजूद हों | क्या भगवान् विष्णु ने कल्कि के रूप में अवतार ले लिया है ? या अवतार लेने वाले हैं ? इसके कुछ हिंट हनुमान जी ने अपनी लीलाओं में दिए हैं | शायद आगे आने वाले अध्यायों में यह पूर्णतः सपष्ट हो जाएगा |

तब तक श्री हनुमान जी के निर्देशानुसार साक्षात् हनुमान पूजा अनवरत जारी है | अगर आप अपना कोई प्रश्न , संदेह अथवा प्रार्थना साक्षात् हनुमान पूजा में सम्मिलित करवाना चाहते हैं तो सेतु के माध्यम से कर सकते हैं | (write them in "My Experiences" section.)

Himanshu, आप साक्षात् हनुमान पूजा में अर्पण भेजकर यजमान के रूप में भी हिस्सा ले सकते हैं | अर्पण हनुमान जी की लीलाओं का अध्याय पढने के 108 घंटे के अन्दर होता हैं |

Your Offerings so far at this chapter: Fruits worth

Rs. 0

Offerings have been closed for you on this chapter because 108 hours have passed since you first read this chapter.You did not give offerings in that time period. Check next chapter.

Your Successful transactions on this chapter :

No successful Arpanam attempt from you on this chapter so far.

Your Incomplete/Failed transactions on this chapter :

You don't have any incomplete or failed transaction on this chapter.

« Previous Next Chapter »

भक्तिमाला मंत्र अनुभव कृतज्ञता प्राचीर विन्यास

Home **मातंग इतिहास** Terms of Use Privacy Policy Reach Us **तकनीकी सहायता** Setuu © 2016 Read in English

Gratitude Wall Devotee Queries Experiences and Prayers Hanuman Leelas

Print